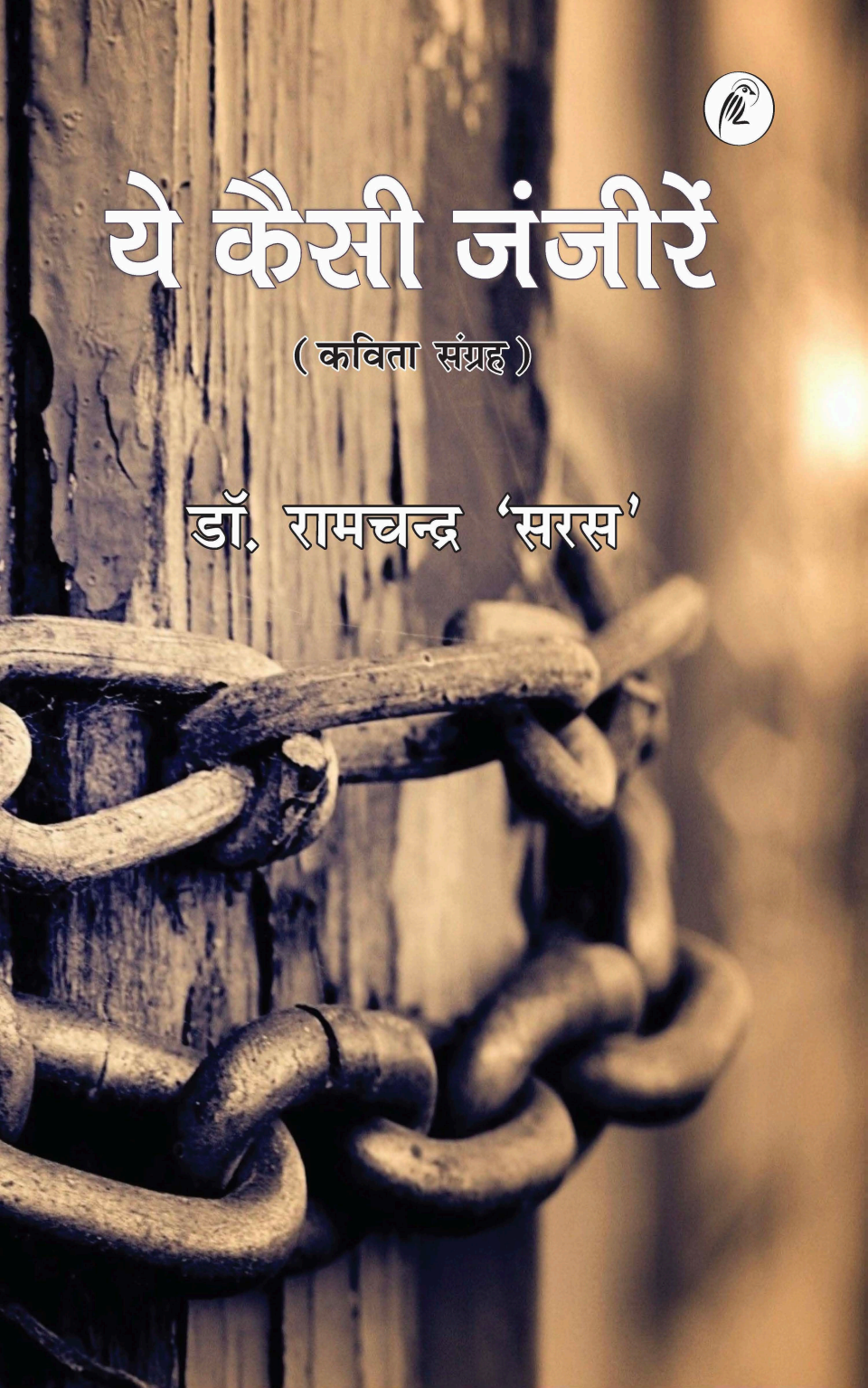

ये कैसी जंजीरें

(कविता संग्रह)

डॉ. रामचन्द्र 'सरस'

डॉ. रामचन्द्र 'सरस'

जन्म : 12 सितंबर, 1957, ग्रा.–जाखी,
पो.–सांडासानी, जि.–बाँदा (उ.प्र.)

पिता : स्व. जगमोहन सिंह यादव

माता : स्व. शिव सखी

शिक्षा : बी.ए., आयुर्वेदाचार्य (बी.ए.एम.एस.)
पंजी. 38504

सम्पादक : माटी (त्रैमासिक पत्रिका)

अध्यक्ष : उ.प्र. सहकारी ग्राम विकास बैंक लि., शाखा–बवेरू, बाँदा।

सदस्य : सचिव मंडल–सी.पी.आई. (उ.प्र.) कार्यकारिणी–पी.डब्लू.ए. (उ.प्र.)

प्रकाशित रचनायें :

उपन्यास : आहुति, कमालपुर की रागिनी, चिंगारी, काकोरी के बाद कमासिन।

कविता संग्रह : 'किसान कथा,' 'जनरल बोगी,' 'नया सवेरा', 'चित्रकूट के राम', 'ये कैसी जंजीरें', कोई तो अन्त बताए।

जीवनी : कामरेड दुर्जन भाई, संत पाखंडी भिखारी, कामरेड देवकुमार यादव।

अप्रकाशित रचनायें : मुक्ति का रास्ता, जीवन का ताप, जलन (उपन्यास), आदमी की भूख, अभी वक्त है, कलम उनके हाथ थी (कविता संग्रह)।

वर्तमान पता : राजापुर रोड, कमासिन, बांदा (उ.प्र.) 210125

मो. : 94510–93745, 91255–01293

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726
ISBN 978-93-93091-50-5
₹ 160.00

ये कैसी जंजीरें

ये कैसी जंजीरें

(कविता-संग्रह)

डॉ. रामचंद्र 'सरस'

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-50-5
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2023
© डॉ. रामचंद्र "सरस"

आवरण कलाकृति : ककसाड़ टीम
मुद्रक : साईं प्रिंटर्स, दिल्ली

YE KAISI ZANJIREIN
by DR. RAMCHANDER 'SARAS'

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

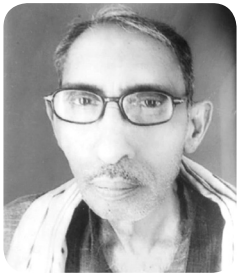

स्व. डॉक्टर केवल सिंह

समर्पण

सारा जीवन जिनका रहा समर्पित
मजदूरों मजलूमों की सेवा में
अर्पित रचना उसी साथी को
जिन्होंने जनहित में
अपने को कुर्बान किया
साथी **डॉक्टर केवल सिंह** को सादर!

ये कैसी जंजीरें

यह कविता-संकलन कामरेड रामचंद्र सरस ने डॉक्टर केवल सिंह को समर्पित किया है जो अभी कुछ दिन पहले अपना पूरा जीवन कम्यून को ही समर्पित कर चले गए।

हमारे समाज में घर-परिवार के द्वारा अपने आत्मीय जनों की स्मृति को संरक्षित करने की परंपरा नहीं है; लेकिन ईमानदार साथियों के बीच चलती चली आ रही है। उनका यहाँ पर निर्वहन होते देख कर खुशी हुई।

डॉ. रामचंद्र सरस तो शारीरिक स्वास्थ्य के डॉक्टर हैं लेकिन लगातार मानसिक रूप से बीमार होते जा रहे समाज को देखकर विचारों की तेज छुरी से लोगों का इलाज करने में लगे हैं।

'ये कैसी जंजीरें' इनका छठा कविता-संकलन है। इन कविताओं की तेज वैचारिक धार सीधे सामंतवाद-पूँजीवाद की जड़ों में प्रहार करती है। कविता के माध्यम से कवि का यह उद्घोष सोचने के लिए बाध्य करता है।

'मैं हूँ तो सिर्फ आदमी जीना चाहता हूँ/सिर्फ आदमी के लिए/मरना चाहता हूँ/सिर्फ आदमी के लिए।' जब कोई बात बहुत सीधे और सपाट ढंग से कही जाती है तो उनमें भी एक काव्य सौंदर्य पाया जाता है। सीधे और सहज रूप का कार्य सौंदर्य इनकी सभी कविताओं में प्रभावित हो रहा है।

'देश के/खाए-कमाए/सजे-सजाये/पढ़े-लिखे।' अवसर के साथ जीने वाले लोग हिंसक जीवों से ज्यादा खतरनाक हो गए हैं।

इन कविताओं में लगातार आक्रोश की धारा प्रवाहित होती दिखाई देती है। इन कविताओं को देखकर लगता है आक्रोश जब ओज में बदल जाता है तो भाषा काव्यात्मक हो जाती है। इन कविताओं को देखकर बहुत आसानी से समझा जा सकता है, छोटे-छोटे विषयों को कहने का माध्यम बनाकर पाठक के सामने आती हैं। कविताएँ उनमें चेतना जगाती हैं। सोचने के लिए विवश करती हैं। शायद कविता का यही काम है। जो कविताएँ करती दिखाई देती हैं।

कविता में जो कला की माँग करते हैं उन्हें यह कविताएँ निराश कर सकती हैं। लेकिन कवि के सहज विचार और मान बोध के पास कुछ पल ठहरेंगे तो निश्चय ही ये कविताएँ उन्हें निराश नहीं करेंगी। 'हम आदमी हैं/ बने रहने दो/हमें आदमी/ऐ सियासत बाजो/मत रौंदाओ/आदमी को आदमी से/यह कविताएँ आदमी के जीवन का पाठ हैं।' उनके संघर्ष की गाथा है। जिस जमीन की यह कविताएँ हैं वहाँ यह कविताएँ निश्चित ही समाहित होंगी और कवि के यश में वृद्धि करेंगी।

–नरेंद्र पुंडरीक
केदार स्मृति न्यास, बाँदा

अपनों से अपनी बात

पाठक साथियो,

मुझे ये छठवाँ कविता-संग्रह आपके सामने प्रस्तुत करने में बेहद खुशी हो रही है। इन कविताओं के पीछे कैसी मानसिक पीड़ा है, आप ही निर्धारित करेंगे।

मैं कोई खास पढ़ा-लिखा आदमी नहीं हूँ, मैं गाँव-देहात का आदमी हूँ। किसान का बेटा, मजदूर का पोता हूँ।

इन कविताओं में कोई काव्य प्रबंध नहीं है। मैंने सीधे-सपाट शब्दों में जो समाज के सामने घटित हो रहा है, उसे कलमबद्ध किया है। हाँ, कुछ लोगों की मेरी दृष्टि में अंतर जरूर हो सकता है।

आज हमारे सिस्टम में बैठे लोग यह कतई नहीं स्वीकार करेंगे कि समाज जो यातनाएँ झेल रहा है उसकी वजह हमारा सिस्टम है।

वह कहेंगे यह तो ईश्वर की मर्जी है, पिछले जन्मों का फल है, ये काम-चोर है, अनपढ़ है, गँवार है, गंदे लोग हैं, इन्हें काम करने का कोई तरीका नहीं है, जीने का ढंग नहीं है, गाँजा-दारू के लती हैं, जो कमाते हैं, दारू में उड़ा देते हैं आदि बातें कहकर अपने को मुक्त कर लेते हैं।

मैं इन सब सवालों का एक ही जवाब देता हूँ—यह जो हो रहा है उन सबकी देन हमारा सिस्टम है। इस सिस्टम को ऊर्जावान बना रही हैं हमारी परंपराएँ, रूढिवादी विचारधाराएँ, हमारे देश के साधु-संत, कथाकार, जिनकी छाया में फल-फूल रहा है बाजारवाद, पूँजीवाद।

ये कविताएँ जनमानस पर कितना प्रभाव डालेंगी मैं नहीं जानता; लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि इस सिस्टम में रचे-बसे लोगों की अंतरात्मा को झकझोरेंगी जरूर।

कबीर ने बहुत पहले कहा था—"जो सोवै सो सोवै जो जागे सो रोवै।" हमारे समाज की यही स्थिति है। चतुर लोगों ने बड़ी चालाकी से समाज को कई भागों में बाँट रखा है। जिन बँटवारों के कारण उनको एक करना, मेंढक

तौलने वाली कहावत है—तराजू में एक को बैठाते हैं तो दूसरा कूद जाता है—जो जिस हुनर का जानकार था उसे उसकी जाति या बिरादरी का नाम दे दिया गया है।

आज जाति एक बड़ा समूह है। हर समूह में भी कई चालाक लोग प्रकट हो गए हैं जो समाज को गुमराह करके अपनी गोटी लाल कर रहे हैं। समाज जहाँ-का-तहाँ खड़ा है।

जनता के मुख्य सवाल हैं।

'आर्थिक न्याय' लेकिन इन सवालों को दबाने के लिए जाति और धर्म की इज्जत से जोड़ दिया गया है। धर्म के नाम से आए दिन कोई-न-कोई षड्यंत्र रचे जाते हैं।

इसी तरह जातीयता के स्वाँग भरे जा रहे हैं। इनके परिणाम देश के सामने हैं। आज देश की 88% पूँजी पर 1% लोग काबिज हो गए हैं तथा 12% पूँजी पर 99% लोग जीवन-यापन कर रहे हैं। सवाल खड़े करने वालों को कहीं अर्बन नक्सलाइट, कहीं माओवादी कह कर दंडित किया जा रहा है।

मेरा विश्वास है कि इन कविताओं को यदि आपने गौर से पढ़ा तो जरूर जाति-धर्म से ऊपर उठकर 'आर्थिक न्याय' के लिए खड़े होंगे।

यदि आपने अपने को पहचान लिया तो मैं समझूँगा मेरा प्रयास सफल रहा।

आपका सादर

डॉ. रामचंद्र 'सरस'

अनुक्रमांक

- ये कैसी जंजीरें 7
- अपनों से अपनी बात 9

1. मैं समय हूँ 13
2. डर 15
3. तंत्र 16
4. जीत 17
5. आर्थिक न्याय 18
6. सुख 19
7. आजादी का अर्थ 20
8. सवाल 21
9. कैसा होगा देश 22
10. मुक्ति नहीं 23
11. मैं नहीं जीना चाहता 24
12. अमानत 26
13. चलो चलें क्रांति की राह 28
14. बेतहाशा 29
15. भोंपू 31
16. मुस्कान आने दो 33
17. नहीं दिखाई पड़ते 34
18. आओ खोजें 35
19. आओ रचें ऐसा संसार 36
20. मृत्यु के बाद की चिंताओं में 38
21. जब मैं डूबता हूँ 40
22. लुटेरों का राज 41
23. अपनी ढपली, अपना राग 43
24. समझ 44
25. पिजड़े 45
26. ढोल के बोल 46
27. सच्चे इंसान 47
28. मैं आदमी हूँ 48
29. कैसे बचेगा देश 49
30. विपदाएँ 51
31. मेरे गाँव के लोग 53
32. हम कैद हो गए 54
33. रौंदता चला जा रहा है आदमी 55
34. कैसे खेला खेल 56
35. उठो खड़े हो जाओ 57
36. तलवार 58
37. खबरदार 59
38. गाँव 60
39. हमारे देश के सिस्टम में 61
40. घृणा 62
41. मैं बसंत हूँ 63
42. महा स्वार्थी व्यवस्था 64
43. मैं आवाज हूँ 66
44. सब हैं किराएदार 68
45. गुलामी की जंजीरें 70
46. विकास 71
47. आदमी 72
48. चुनाव 73

49. वे दिन 74
50. हमें लिखना है 76
51. पुष्पा 77
52. इक्कीसवीं सदी 79
53. मैं जीतता रहा 81
54. बाढ़ 82
55. गांधी तेरा ग्राम स्वराज 83
56. जिस दिन मिटेगी अमीरी 84
57. हम आदमी हैं 86
58. पूछ रहा है लोक 87
59. गाय 88
60. जब से जनता बँधी 89
61. भगवान हो गए 90
62. मेरे ही घर में 91
63. तेरी चाल न जानी 93
64. हे ईश्वर 94
65. आदमी कहलाने के हकदार होते 96
66. होड़ 97
67. सुराज 98
68. महाभारत 99
69. भेड़ 100
70. फिर से जलाएँ दीया 101
71. जनता अक्षय रही है 103
72. लाल झंडा 104
73. संवाद 105
74. लानत है तुझे 106
75. चित्रकूट की धरती 108
76. कोरोना 110
77. मैं गऊ माता हूँ 112
78. चेहरा 114
79. नेता 115
80. कलम कटारी 116
81. बुढ़ापा 117
82. शिकारी 118
83. भेड़िया 121
84. हम मनाते रहे मौज 122
85. ये कैसी जंजीरें हैं 124
86. बदकिस्मती 125
87. आजादी है हक हमारा 126